प्रकाशनार्थ

द्वितीय शैबाल गुप्ता स्मृति व्याख्यान

पटना, 21 जून। प्रौद्योगिकी के उदय ने उत्पादन की नई पद्धति का निर्माण किया है और इसने मानवीय संबंधों को भी बदल दिया है। भारत निश्चित रूप से नई प्रौद्योगिकियों के विकास से लाभान्वित होने की स्थिति में है। विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कौशिक बसु ने "डिजिटल एडवांस एंड राइज ऑफ लेबर–लिंकिंग टेक्नोलॉजी : ए ग्लोबल चौलेंज" शीर्षक वाले अपने व्याख्यान में इस पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "वैश्वीकरण जारी रहना चाहिए और यह केवल ही बुरा नहीं है। इसके बारे में गुस्सा करना गुरुत्वाकर्षण से नाराज होने जैसा है। श्रम–लिंकिंग प्रौद्योगिकियों के मद्देनजर, अर्थव्यवस्थाओं को अच्छा करने के लिए, श्रमिकों के साथ एक निश्चित मात्रा में लाभ–साझाकरण होना चाहिए, जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका, कुछ यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं और चीन द्वारा सामना की जा रही श्रम की चुनौतियों को दूर करने के लिए एक बुद्धिमान तरीके से हो। स्वास्थ्य और शिक्षा ऐसे क्षेत्र हैं जो ऐसे परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत लाभ पहुंचा सकते हैं।"

प्रोफेसर बसु संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉर्नेल विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक एवं सी. मार्क्स प्रोफेसर अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन हैं, आज यहां 'द्वितीय शैबाल गुप्ता स्मृति व्याख्यान' दे रहे थे।

शोध संस्थान 'सेंटर फॉर इकोनॉमिक पॉलिसी एंड पब्लिक फाइनेंस' (सीईपीपीएफ) ने आद्री के सहयोग से इस व्याख्यान का आयोजन किया। स्वर्गीय डॉ. गुप्ता सीईपीपीएफ के संस्थापक–निदेशक थे और बिहार के लोक वित्त और संबद्ध मुद्दों पर अंतर्दृष्टि के लिए उन्होंने इसे मजबूती से स्थापित किया। हाल ही में उन्हें शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए मरणोपरांत पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

इस अवसर पर आद्री के सदस्य–सचिव प्रो. प्रभात पी घोष ने अतिथियों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में, प्रो. घोष ने कहा, "यह गर्व की बात है कि भारत सरकार ने डॉ शैबाल गुप्ता को मरणोपरांत पद्मश्री से सम्मानित किया।"

व्याख्यान के पूर्व डा. अस्मिता गुप्ता ने प्रोफेसर बसु का परिचय कराया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि, "प्रोफेसर बसु उन कुछ बुद्धिजीवियों में से एक हैं जिन्होंने नीति जगत में इतने महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है, और अभी भी महान शोध पत्र तैयार करने में लगे रहते हैं।"

प्रो. बसु ने नई सैद्धांतिक सोच और सर्वोत्तम नीति प्रतिक्रियाओं के बारे में अनुमान लगाने की आवश्यकता पर बल दिया। अपने व्याख्यान में प्रो. बसु ने कहा, "आपको नीति की जरूरत है, लेकिन अर्थव्यवस्था को समझने के लिए आपको बुद्धि की भी जरूरत है। श्रम की मांग कम हो रही है, और यह आप जापान में देख सकते हैं, जहां सकल घरेलू उत्पाद में श्रम का योगदान 77 प्रतिशत से घटकर 59.8 हो गया। ऐसा हर जगह हो रहा है। लेकिन श्रम जोड़ने

वाली प्रौद्योगिकियां नए अवसर पैदा कर रही हैं। उदाहरण के तौर पर भारत के लिए आउटसोर्सिंग भारत के लिए चमत्कार कर रही है।"

भारत को शिक्षा के क्षेत्र में क्या करने की जरूरत है पर बोलते हुए प्रो. बसु ने कहा, "भारत ने अपने उच्च शिक्षा के मोर्चे पर बहुत अच्छा किया है, लेकिन बुनियादी साक्षरता पर भारत को और काम करने की जरुरत है। साथ ही, भारत को शिक्षा का केंद्र बनने का प्रयास करना चाहिए, जिसका निश्चित रूप से प्रभाव पड़ेगा। हम दक्षिण कोरिया के उदाहरण को देख सकते हैं जिसमें प्रति व्यक्ति बौद्धिक संपदा विश्व में सबसे अधिक है।"

इस अवसर पर बिहार के उप–मुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद मुख्य अतिथि थे। श्री प्रसाद ने अपने भाषण में कहा, "हमें यह सोचना होगा कि हम विकास के लिए अपने मानव संसाधन और प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे कर सकते हैं। प्रो. बसु की अंतर्दृष्टि भारत के विकास से संबंधित है। हमारी सरकार इन बातों का ध्यान रखेगी।"

प्रो. बसु के व्याख्यान से पहले, आद्री के अध्यक्ष डॉ. हरीश खरे ने भी दिवंगत समाज विज्ञानी की अपनी स्मृति को याद किया। खरे ने कहा, "शैबाल गुप्ता एक सार्वजनिक बुद्धिजीवी थे। उन्होंने बिहार को बाहरी दुनिया को समझाया और वे बिहार के अग्रणी और बेहतरीन बुद्धिजीवी थे। हमें सार्वजनिक बौद्धिकता का सम्मान करना चाहिए और आद्री जैसी संस्थाओं को इस तरह के सार्वजनिक बौद्धिकता के लिए एक मंच प्रदान करके एक भूमिका निभानी चाहिए।"

आद्री के सदस्य–सचिव प्रो. प्रभात पी घोष ने इस अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आद्री के सदस्य सचिव प्रोफेसर प्रभात पी घोष ने कहा कि वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव एवं सीईपीपीएफ के अध्यक्ष–सह–निदेशक डा. एस. सिद्धार्थ के सहयोग के बिना यह संभव नहीं था। उनके प्रति हम आभारी हैं।

पिछले साल, कोविड –19–जनित देशव्यापी लॉकडाउन के कारण, प्रथम शैबाल गुप्ता स्मृति व्याख्यान केवल 'ऑनलाइन' मोड में आयोजित किया जा सका था, और उस वक्त भी एक अन्य विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रो अभिजीत बनर्जी ने यह व्याख्यान दिया था।

इस स्मृति व्याख्यान में अकादमिक, नागर समाज, सरकारी और निजी संस्थानों के लगभग 300 बुद्धिजीवियों ने भाग लिया।

(अंजनी कुमार वर्मा)